भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 05.02.2019

आजाद भारत के लिए महामना ने शुरू कराई थी तकनीकी शिक्षा

वाराणसी | आनंद मिश्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने आजाद भारत को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए यहां तकनीकी शिक्षा शुरू कराई थी। अंग्रेजी हुकूमत के समय बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज (बेंको) की स्थापना की। तकनीकी शिक्षा में डिग्री कोर्स की शुरुआत भी बेंको से ही हुई। दो विषयों के साथ 1919 में शुरू बेंको का यह सफर सौ साल से जारी है। अब यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के रूप में देश के विकास में योगदान कर रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2018 में कराए सर्वेक्षण में नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग में भारत में 28वां स्थान दिया है।

दो विषयों मैकेनिकल व इलेक्ट्रीकल के साथ शुरू यह सफर आज 16 विभागों में फैल चुकी है। इस संस्थान के गौरव से जुड़ा एक तथ्य यह भी है कि आजादी से पहले देश भर के इंजीनियरिंग कॉलेजों में बेंको के छात्र ही शिक्षक और प्रिंसपल बने। बीएचयू को विद्युत अभियांत्रिकी, यांत्रिक अभियांत्रिकी, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं फार्मेसी में सर्वप्रथम डिग्री की कक्षाएं शुरू कराने का श्रेय है। आईआईटी रुड़की और मद्रास बेंको से पहले स्थापित हो चुके थे मगर वहां तब सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स ही चलते थे।

बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज में मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल ब्रांच को मिलाकर इंजीनियरिंग की संयुक्त डिग्री मिलती थीं। बेंको अब प्रौद्योगिकी संस्थान की यात्रा करता हुआ आईआईटी-बीएचयू के रूप में देश-दुनिया में प्रतिष्ठित हो चुका है। बेंको में प्रवेश के लिए कोटा सिस्टम लागू किया था इसलिए हर प्रांत व संस्कृति के विद्यार्थी एक साथ पढ़ते थे। इसीलिए बीएचयू को मिनी भारत भी कहा जाता था।

1919 में मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल के साथ ही सिरेमिक की पढ़ाई बेंको में में शुरू हुई

1968 में प्रौद्योगिकी संस्थान बन गया बेंको

1979 के बाद से शुरू हुआ औद्योगिक प्रबंधन

2012 में आईआईटी बीएचयू के रूप हुआ स्थापित

पढ़ा-पढ़ाया, निदेशक बन संस्थान चलाया

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्कूली शिक्षा ग्रहण कर स्नातक व तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने वाले प्रो. एसएन उपाध्याय आईटी बीएचयू के निदेशक बने। आईटी बीएचयू की गौरवशाली परंपरा के वाहक प्रो. उपाध्याय की स्कूली शिक्षा से लेकर परास्नातक तक की पढ़ाई महामना की बगिया में ही हुई। यूनिवर्सिटी के चिल्ड्रेन स्कूल में 1954 में स्कूली शिक्षा ग्रहण किया। 1967 में आईटी बीएचयू से प्रो. गोपाल त्रिपाठी के निर्देशन में पीएचडी पूरी की। 1973 में लेक्चर, 1979 में रीडर व 1984 में प्रोफेसर बने। 1990 में केमिकल इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष रहे तथा 2005 से 2010 तक आईटी बीएचयू के निदेशक का पदभार संभाला।

50 पैसे में मैदागिन से बीएचयू

आईआईटी बीएचयू के पूर्व छात्र व शिक्षक रहे डॉ. रामजी अग्रवाल ने बताया कि वो भी क्या दिन थे... जब मैदागिन से महज 50 पैसे में रिक्सा बीएचयू पहुंचाता था। सुबह सात बजे से शाम चार बजे तक कक्षाओं का संचालन होता था। हॉस्टल में एक महीने का खर्च अधिकतम 55 रुपये था। मेस महराज भी अभिभावक की तरह होते थे। इतनी आत्मीयता थी की मेस महराज उस दिन आकर डाटते थे जिस दिन हम खाना नहीं खाते अथवा कम खा कर उठ जाते थे। उदास निराश या परेशान होते थे तब महराज अभिभावक की भूमिका अदा करते थे।

प्रो. एसएन उपाध्याय

डॉ. रामजी अग्रवाल